सम्पादक के नाम

3 लाख 70 हज़ार करोड़ रुपये किसकी जेब में जायेंगे!

ये RBI का वो पैसा है जिससे वो देश की इकॉनमी को स्थिर रखती है। और इस पर कुछ ब्याज भी कमाती है।

अब RBI कानून के सेक्शन 7 का इस्तेमाल कर के मोदी जी इस धन को हथियाना चाहते हैं। सरकार का कहना है कि देश आर्थिक इमेरजैंसी में है और सरकार को इस धन की ज़रूरत है जिससे वो इकॉनमी को संभालेगी।

अब सवाल ये है कि अगर देश का विकास हुआ है तो ये इमरजेंसी कहाँ से आई।

और अगर वाकई में इमरजेंसी है तो देश को बताया क्यों नहीं जा रहा इस इमरजेंसी के बारे में? क्योंकि ये इमरजेंसी नोटबंदी, GST और मोदी जी के दोस्तों के 12 लाख करोड़ के NPA की वजह से आई है।

2008 की वैश्विक मंदी में भी भारत सरकार को इमरजेंसी का बहाना देकर RBI के पैसे हथियाने की ज़रूरत नहीं पड़ी तो मोदी जी तो सिर्फ पैट्रोल-डीजल पर देश की जनता से 12 लाख करोड़ ज्यादा वसूल चुके है, दूसरी लूट के पैसे अलग, फिर भी मोदी जी को RBI के 3 लाख करोड़ चाहिए?

ये सारा पैसा जा कहाँ रहा है?

अब अगर RBI का पैसा गया तो उसे भी मोदी जी वैसे ही इस्तेमाल करेंगे जैसे देश की तिजोरी के सारे पैसों को किया। सारा पैसा धन्ना सेठों की जेबों में जायेगा। पर उससे भी खराब बात ये होगी कि RBI जिस काम के लिए बनी है वो काम नहीं कर पायेगी।

ये कितना खराब होगा इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अम्बानी का आदमी उर्जित पटेल, जिसे खुद मोदी जी ने RBI गवर्नर बनाया था वो इसे रोकने इस्तीफा देनेकी धमकी दे चुका है।

अगर ये हुआ तो मार्किट और रुपये की गिरावट छोड़ो, RBI पर से दुनिया का भरोसा उठ जाएगा। ये भरोसा बनाने में देश को 70 साल लगे है, ये 1 सेकिंड में खत्म हो जाएगा।

ये रफाल से बहुत बड़ा कांड है पर सवाल सिर्फ एक है। मोदी सरकार पिछली सारी सरकारों से कई गुना अधिक रुपया जनता की जेबों से काट रही है, चाहे त्रस्ज्ञ या कई सारे टैक्स-सेस के बहाने या पैट्रोल-डीजल पर हो रही लूट के ज़रिए, तो ये सारा पैसा जा कहाँ रहा है? योजनाओं की तो सिर्फ घोषणाएं होती है, किसी योजना में तो पैसा खर्च नहीं हो रहा। अगर खर्च हो रहा है तो सिर्फ पब्लिसिटी पर। फिर सारा पैसा जा कहाँ रहा है?

ये पैसा 3 गुना दाम पर खरीदे रफाल के ज़रिए अम्बानी की जेब में जा रहा है। ये पैसा बैंकों के ज़रिए नीरव मोदी, मेहुल चौकसी, विजय माल्या की जेब में जा रहा है। ये पैसा IL&FS के ज़रिए संदेसरा और राकेश अस्थाना की जेब में जा रहा है। ये पैसा NPA के ज़रिए रुइया, अंडानी, टोरेंट, जिंदल की जेबों में जा रहा है। ये सब ऑन पेपर है, सब को दिखता है जो देख-समझ सकता है।

क्या यही है नया भारत? ये है विकास? ये सब ऐसे ही चलते रहना चाहिए? असली विकास की जगह सिर्फ विकास की जूठी पब्लिसिटी ही चाहिए देश को? इस पब्लिसिटी के लिए देश के गरीबों और मध्यम वर्ग से दुगना टैक्स लूटा जा रहा है?

और विपक्षी दल गहरी नींद में सोये हुए हैं। जनता को तो मोहरा बनना ही है,तो वह बेबस व लाचार सब देख रही है।

- साईबर नज़र

जब भारत के प्रधानमंत्री ही झूठ बोलें तो कौन पुलिस उनके खिलाफ़ एफ आई आर करेगी ?

कल लखनऊ में बीबीसी के beyond fake news में था कि जब भारत के प्रधानमंत्री ही झूठ बोलें तो कौन पुलिस उनके ख़िलाफ़ एफ आई आर करेगी? आज अमरीका से ख़बर आई है कि सीएनएन ने राष्ट्रपति ट्रम्प और उनके सहयोगियों पर मुकदमा कर दिया है। वाशिंगटन पोस्ट ने हाल-हाल तक गिना है कि अपने कार्यकाल में राष्ट्रपति ने 6000 से अधिक झूठ और भ्रम फैलाने वाले बयान दिए हैं। भारत में ऐसा जो करेगा उसे विज्ञापन नहीं मिलेगा। नौकरी भी जा सकती है। एक न्यूज़ चैनल का अपने राष्ट्रपति पर मुकदमा कर देना सामान्य घटना नहीं है। जब रफाल पर सवाल होता है तो भारत के न्यूज़ चैनल चुप रहते हैं।

जब अजय शुक्ला ने तीन किश्तों में ख़बर लिखी तो सब चुप थे। किसी ने विस्तार से नहीं छापा। अव्वल तो छापा ही नहीं। राहुल गांधी ने इन ख़बरों को भी तो ट्विट किया था। उसी से सवाल बनाकर कोई चैनल या अख़बार में छाप कर दिखाए। जब रोहिणी सिंह ने रफाल के अनिल अंबानी की निष्क्रिय सी पड़ी कंपनी में निवेश किया तो इस स्टोरी पर सब चुप रहे। जब रफाल के सीईओ ने कुछ बोल दिया जिससे लगा कि सरकार को क्लिन चिट मिल गई है तो देखिए कैसे चैनल मचल रहे हैं। हिन्दी अख़बार देख लीजिएगा। सी ई ओ की हर बात विस्तार से छपेगी। डरपोक और भांड मीडिया यही कर सकता है। जो कर रहा है वही करने के लिए बना है। गोदी मीडिया।

- साइबर नजर

अमित शाह का सरनेम फारसी मूल का है, भाजपा को सबसे पहले उसे बदलना चाहिए - इतिहासकार इरफान हबीब

नई दिल्ली- कई राज्यों में भाजपा सरकारों द्वारा शहरों के नाम बदलने के फैसलों के बीच प्रख्यात इतिहासकार इरफ़ान हबीब ने कहा है कि पार्टी को सबसे पहले अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह का सरनेम बदलने के बारे में सोचना चाहिए.

इतिहासकार प्रो. इरफ़ान हबीब ने कहा, 'भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का सरनेम शाह दरअसल गुजराती नहीं बल्कि फ़ारसी मूल का शब्द है, इसलिए पार्टी को सबसे पहले उनका नाम बदलना चाहिए.'

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, प्रो. इरफान हबीब ने कहा, 'गुजरात शब्द भी फारसी मूल का है. पहले इसे गुजरात्र नाम से जाना जाता था. इसका भी नाम बदला जाना चाहिए.'

प्रोफेसर इरफान ने कहा, 'भाजपा सरकारों की ओर से नाम बदले जाने की यह रणनीति आरएसएस की ही नीतियों के ही समान है. जैसा कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में जो कुछ भी ग़ैर इस्लामिक था, उसके नाम बदल दिए गए. इसी तरह भाजपा और दक्षिणपंथी समर्थक उन चीजों को बदलना चाहते हैं, जो ग़ैर हिंदू हैं और ख़ासकर इस्लामी मूल के हों.'

रिपोर्ट के अनुसार, प्रो. हबीब ने यह प्रतिक्रिया उत्तर प्रदेश में पांच बार के विधायक जगन प्रसाद गर्ग के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिए एक पत्र को लेकर दी. इस पत्र में में गर्ग ने ताजनगरी आगरा का नाम बदलकर 'अग्रवन' करने का अनुरोध किया है. उन्होंने बताया है कि आगरा अग्रवाल समुदाय का घर है, जो महाराज अग्रसेन के अनुयायी हैं. टाइम्स ऑफ इंडिया से बात करते हुए गर्ग ने कहा, 'ये आगरा नाम का कोई मतलब नहीं है. पांच हज़ार वर्ष पहले ये पूरी यमुना के किनारों पर घना जंगल था, जिसे लोग अग्रवन कहते थे. जिसका उल्लेख महाभारत में भी है, लेकिन मु?लराज में इसका नाम बदलकर अकबराबाद कर दिया गया.' गर्ग ने बताया कि अग्रवन अग्रवाल समुदाय के लोगों का इलाका है और आगरा में लगभग चार लाख अग्रवाल रहते हैं. उस समय महाराज अग्रसेन ने अग्रवन पर राज किया था और अग्रवाल समुदाय उन्हीं का अनुयायी है.

प्रोफेसर इरफान ने गर्ग के दावों को लेकर कहा, 'महाराज अग्रसेन का इतिहास पूरी तरह से पौराणिक कथाओं पर आधारित है. दूसरी बात कि अग्रवाल समुदाय दावा करते हैं कि उनका मूल स्थान हरियाणा के अगरोहा में है, इसलिए विधायक द्वारा आगरा का नाम बदलने के लिए दिया गया दोनों तर्क गलत है.'

प्रोफेसर ने आगे बताया, 'पहली बार आगरा नाम 15वीं शताब्दी के लोधी साम्राज्य के वक्त सुना गया था. इस पूरे इलाके को गंगा और युमना के बीच का दोआब कहा जाता था.'

- साइबर नजर

हरेन पंड्या हत्याकांड में नये खुलासे के बाद वरिष्ठ पत्रकार प्रशांत ने जागृति को लिखा पत्र, कहा- आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं थी

कलीम सिद्दीकी

गुजरात के पूर्व गृहमंत्री हरेन पंड्या हत्याकांड केस में एक नया मोड़ तब आ गया जब आजम खान नामक गवाह ने कोर्ट को बताया कि "हरेन पंड्या को मारने की सुपारी पूर्व आईपीएस डीजी वंजारा ने सोहराबुद्दीन को दी थी।" जो बात गवाह ने कही यह बात अफवाहों, सरकारी महकमों की चर्चाओं और राजनैतिक गलियारों में आम थी। इस प्रकार की बातें पिछले 15 वर्षों में रही हैं। हत्याकांड के पीछे वंजारा के अलावा अभय चूडास्मा और अमित शाह का हाथ होने का शक किया जाता रहा है। यदि गवाह का बयान सही है तो इस हाई प्रोफाइल हत्याकांड के तार देश के सबसे ताकतवर व्यक्ति तक पहुंच सकते हैं। गवाह के बयान से सबसे बड़ा प्रश्न यही उठता है कि वंजारा पंड्या की हत्या की सुपारी सोहराबुद्दीन को क्यों देगा? जबकि वंजारा और पंड्या के बीच कोई दुश्मनी हो.....ऐसा कभी भी नहीं देखा गया।

क्या यह राजनैतिक हत्या थी? जिसके चलते कभी औरंगजेब ने सत्ता की खातिर दाराशिकोह को मरवा दिया था। वरिष्ठ पत्रकार एवं हरेन पंड्या के मित्र प्रशांत दयाल ने हरेन की पत्नी जागृति पंड्या को लिखे गए खुले पत्र में बहुत सी बातें कह डाली हैं। इसके हिसाब से पंड्या हत्याकांड राजनैतिक षड्यंत्र का हिस्सा मालूम होता है। दयाल का यह खुला पत्र मेरा न्यूज डॉट कॉम में प्रकाशित हुआ है खुले पत्र का शीर्षक है "तमे आवा करवा नी जरूर नहती" (आप को ऐसा करने की जरूरत नहीं थी)।

आप को बता दें कि जागृति पंड्या इस समय बीजेपी में हैं। और उन्हें गुजरात सरकार ने बाल एवं महिला विकास विभाग का चेयरमैन बनाया है। पत्र से प्रतीत होता है कि दयाल जागृति पंड्या के इस निर्णय से खुश नहीं हैं। गवाह के बयान के बाद जागृति कुछ भी बोलने से बच रही हैं। प्रशांत दयाल ने यह पत्र गुजराती भाषा में लिखा है जिसका यहां हिंदी अनुवाद दिया जा रहा है। जिसे जनचौक संवाददाता कलीम सिद्दीकी ने किया है-संपादक)

जागृति बहन,

ऐसे तो मैं और मेरे जैसे हरेन के मित्र आप को भाभी के नाम से संबोधन करते हैं इसके बावजूद पत्र लिखते समय आपको बहन के नाम से संबोधन कर रहा हूं। साल 2003 से पहले मैं आपके घर हरेन से मिलने आता जाता था तो आप से भी बातचीत हो जाती थी। 26 मार्च 2003 की सुबह भी मैं और मेरे सभी मित्र हैरान थे हरेन को गोली मारी गई थी। यह समाचार जैसे ही मिला मन से आवाज निकली ईश्वर बचा लेना लेकिन ईश्वर भी कभी-कभी निष्ठुर हो जाते हैं। हमारी प्रार्थना घर की दीवारों से टकरा कर वापस लौट आती है।

मैं समझता हूं हरेन मेरा मित्र था लेकिन आपका पति और दो बच्चों का पिता भी। उस समय बच्चे भी छोटे थे। उस समय आप की परिस्थिति समझी जा सकती थी। मेरे अंदर इतनी भी हिम्मत न थी कि आपको आश्वासन दे सकूं। इसीलिए मैं मिलने भी नहीं आया। न ही फोन किया। ऐसी हालत में कैसे कहता हिम्मत रखना। क्योंकि जो स्त्री अपना सब कुछ गवां दी हो उसकी वेदना आप से बेहतर कौन समझ सकता है।

हरेन के पिता विट्ठल भाई के लिए भी बढ़ा आघात था। खुद के बेटे को कन्धा देना किसी भी पिता के लिए कितना पीड़ादायक होता है। मैं समझ सकता हूं वह जाहेर में रो-रो कर कहते थे हरेन की हत्या नरेंद्र मोदी ने कराई है। उस समय मेरा मन इस बात को मानने को तैयार न था। हरेन पंड्या ने अपनी एलिस ब्रिज विधानसभा सीट को नरेंद्र मोदी के लिए खाली करने से मना कर दिया था। उस दिन से ही मोदी - पंड्या आमने-सामने थे। जिस कारण हरेन की हत्या नरेंद्र मोदी ने कराई है। शक होना स्वाभाविक है। विट्ठल भाई अपने जीवन के अंत तक अपने बेटे के हत्यारे को सजा दिलाने के लिए लड़ते रहे। उस समय आप बिल्कुल शांत थीं। आपको अपने बच्चों की सुरक्षा की चिंता थी। आप शांत थीं इसका अर्थ कत्तई नहीं था कि आप हरेन को न्याय नहीं दिलाना चाहती थीं लेकिन संयोग ही ऐसा था।

बच्चे बड़े हुए। आप बाहर निकलीं। आप समझदार थीं। आपको मालूम था कि ससुर विट्ठल भाई की तरह केवल आरोप लगाने से परिणाम नहीं आएगा। मैं आप के प्रयत्न का गवाह हूं। आप हरेन पंड्या की फाइल लेकर एक वकील से दूसरे वकील के ऑफिस घूम रही थीं। हम भी मिलते थे। चर्चा करते थे कि कैसे आगे बढ़े। पुलिस और सीबीआई द्वारा पकड़ा गया असगर अली जिसने हरेन को गोली मारी थी वह सिर्फ एक मोहरा है। हम दोनों ऐसा मानते थे। हमें शक था हरेन की हत्या के पीछे अमित शाह हो सकता है। हमें केवल शक था। हमारे पास उस समय भी और आज भी कोई आधार नहीं है। हरेन की हत्या असगर ने की है या नहीं । यदि की है तो किसके इशारे पर यह जानना महत्वपूर्ण था। आपकी हिम्मत और प्रयत्न की दाद देनी होगी। एक स्त्री होते हुए आप अपने पति के हत्यारे से मिलने जेल पहुंच गईं। आपने असगर से खूब विनती किया। उसका केस भी लड़ने की तैयारी बताई। फिर भी वह आपके सामने कुछ नहीं बोला।

जब गुजरात हाईकोर्ट ने असगर सहित सभी को निर्दोष छोड़ दिया तो हमारे मन का शक और भी मजबूत हो गया। जब असगर ने हरेन को नहीं मारा तो किसने मारा। आप दिल्ली सीबीआई के धक्के कम नहीं खायीं। उस समय यूपीए की सरकार थी। अहमद पटेल नाम का सिक्का बोलता था। इस मामले में सीबीआई दोबारा जांच करे, सुप्रीम में अपील करे। इसलिए आप कई बार इनसे भी मिलीं थीं लेकिन कांग्रेस वाले भी नालायक साबित हुए। उन्हें केवल हरेन के नाम से मोदी और अमित शाह को गाली देने के सिवाय किसी और चीज में दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने भी किसी प्रकार की मदद नहीं की। मेरी और हरेन की मित्रता उस समय से थी जब वह कॉर्पोरेटर थे। मैं प्रदीप सिंह जडेजा और बिमल रोज ही मिलते थे।

मेरा काम पत्रकारिता है। कई बार मैं भाजपा और हरेन के खिलाफ लिखता था। वह मेरे काम को जानता था। कभी-कभी नाराज भी होते थे। फिर खुद को समझा लेते थे। मेरे जैसे पत्रकार के जीवन में खराब दिन भी आते हैं। हरेन मेरे बुरे समय का साथी था। हमारे संबंध तूं तुकार वाले थे। मैं आपके साथ इसीलिए खड़ा था क्योंकि मुझे अपनी मित्रता का ?? चुकाना था। हम लोग हरेन को न्याय दिलाने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। हमारा इरादा नरेंद्र मोदी और अमित शाह से बदला नहीं लेना बल्कि जिसने हरेन की हत्या की है वह पकड़ा जाये और सजा हो ऐसी ही इच्छा थी। हम हों या कोई अनजान व्यक्ति सभी को समझ में आएगा कि हरेन की हत्या से किसे लाभ होने वाला था लेकिन हमारे पास कोई आधार न था। कई बार हम लोग थक हार कर बैठ गए।

हरेन की हत्या किसने की और क्यों कराई गई हम ढूंढ नहीं पाए। जिसका अफसोस हमें आज भी है लेकिन मुझे और मेरे मित्रों को सदमा उस समय लगा जो भाजपा नेता तुम्हारे पति की हत्या करवाने के लिए शक के घेरे में थे और जो भाजपा नेता हरेन की हत्या के बाद तुमसे दूर रहने का प्रयत्न करने लगे थे। तुम्हारे मुश्किल समय में हरेन के खास गिने जाने वाले अनगिनत मित्र और बीजेपी नेता दूर जाते रहे। कारण कि आप के साथ रहने का अर्थ था नरेंद्र मोदी और अमित शाह से दुश्मनी लेना। समय बदला और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बन गए और अमित शाह राष्ट्रीय अध्यक्ष। ऐसे तो आप मेरे साथ छोटी-छोटी बातों पर चर्चा करती थीं लेकिन वह बात आपने कभी नहीं कही। एक दिन सुबह जब मुझे खबर मिली कि आप भाजपा में जुड़ गए हो तो मैं हैरान था।

आप भाजपा में जुड़ीं और बोर्ड की चेयरमैन भी हो गईं। मेरा मन कुछ भी समझ सके ऐसी स्थिति में नहीं था। सवाल तुम्हारे भाजपा में जुड़ने का नहीं था। जब भी राष्ट्रीय नेता अहमदाबाद आते और हरेन केस के सिलसिले में तुम उनसे मिलने का प्रयत्न करती तो यही भाजपा के नेता पुलिस से कह कर तुम्हें डिटेन कराते थे। हमारे पास कोई आधार न था फिर भी हम लोग मानते थे कि हरेन की हत्या किसी भाजपा नेता ने ही कराई है। आपने ऐसा क्यों किया यह सवाल मैं कई बार अपने आप से पूछ चूका हूं। आप के सामने ब्रेड बटर का सवाल नहीं था। भाजपा में जुड़ो और चेयरमैन बनो तभी तुम्हारा चूल्हा जलेगा ऐसा भी न था। तो फिर आपने ऐसा क्यों किया? कभी कभी मेरे मन में ऐसी भी शंका हुई है कि आप हरेन की मौत के नाम पर भाजपा नेताओं पर दबाव बनाकर पद और ओहदा लेना तो नहीं चाहती थीं ? लेकिन ऐसे गलत विचार को मैंने निकाल दिया क्योंकि आप ऐसा नहीं कर सकतीं।

हो सकता है आप भाजपा में गयीं और चेयरमैन बनीं जिस कारण आपने मेरे साथ बात करना लगभग बन्द ही कर दिया है। आपको ऐसा भी लगता होगा कि तुम्हारे इस निर्णय के बारे में तुमसे मैं पूछूंगा तो आप क्या जवाब दोगे। तुम्हें मुझे जवाब देना है यह जरुरी नहीं है। इसके बावजूद बोलना ये आप का शिष्टाचार भी था। सरकारी कार में सरकारी ऑफिस में जाती होंगी और हरेन की हत्या किसने की यह बात तो आप भूल ही गए लेकिन मैं नहीं भूल सका। सिस्टम के सामने मैं भी लाचार होने के कारण कुछ नहीं कर सका। कई बार मुझे अपनी इस लाचारी पर गुस्सा भी आया। पिछले शनिवार को मुम्बई कोर्ट में सोहराबुद्दीन शेख के साथी आजम खान ने बताया हरेन पंड्या की हत्या पूर्व आईपीएस डीजी वंजारा के इशारे पर हुई। विस्फोट किया उसी समय तुरंत ही मुझे आप की याद आ गई।

वर्तमान में आजम सच बोल रहा है। यदि यह मान लिया जाये तो वंजारा और हरेन में कोई दुश्मनी नहीं थी तो वंजारा ने हरेन की हत्या क्यों करवाई। यह महत्त्व का सवाल है। हम लोगों का शक और सामने आए तथ्य अमित शाह की ओर ले जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में आप उनके साथ कैसे बैठ सकती हो। मान लिया जाये कि विठ्ठल भाई की तरह आप भी लड़ते-लड़ते मर जायेंगी। लेकिन जिस पर हरेन की हत्या करवाने का शक हो ऐसी कौन सी बात है जो तुम्हें वहां बैठने के लिए मजबूर करती है। या सत्ता का लालच है। इस पत्र को पढ़ कर आप को खराब जरूर लगेगा लेकिन मेरी बात पर विचार करना। देर कभी नहीं होती। गलती सब करते हैं बस सुधार लेने की तैयारी होनी चाहिए।

जब भी हम लोग हरेन से मिलेंगे जहां (स्वर्ग) वह है तब हम हरेन से कह सकें दोस्त तुम्हारे लिए खूब लड़े और लड़-लड़ कर थक गए और हारे भी। लेकिन कभी भी समझौता नहीं किया। ऐसा कुछ करने का प्रयास करो ताकि ऐसा कह सकें।